

रोटरी, शाश्वत आनन्द की पथ—प्रदर्शक*
(Rotary Leads to Eternal Pleasure)

इस सुहानी सुबह, ग्वालियर जो मेरी कर्मभूमि रही है, उसमें रोटरी सेवा—पथ के पथिकों और सेनानियों, जिनके चेहरे रोटरी—सेवा के पथगामी होने के कारण शान्ति और प्रसन्नता के भाव और उत्साह से दमक रहे हैं, उनके बीच स्वयं को पाकर प्रसन्नता की अनुभूति कर रहा हूं।

ग्वालियर के समर्पित रोटेरियन्स, जिनका नेतृत्व पास्ट गवर्नर डॉ. वी. के गंगवाल कर रहे हैं, इस सम्मेलन को नाम दिया है 'फिएस्टा', 'रोटरी फिएस्टा'। शब्दकोष के अनुसार 'फिएस्टा' का अर्थ है—'धर्म—सम्मेलन'। मेरे मन में जिज्ञासा हुई कि क्या रोटरी कोई धर्म है? कुछ चिंतन से प्रश्न का उत्तर मिल गया। एक अर्थ में रोटरी भी धर्म है। एक विश्व कोष के अनुसार, धर्म किसी व्यक्ति की वह वृत्ति है जिसमें वह सदा रहता है, पृथक नहीं हो सकता और जो उसका स्वभाव बन जाता है। एक और अर्थ में, धर्म विधि—निषेध की आचार संहिता है। क्या किया जाए और क्या न किया जाए? धर्म का उद्देश्य मनुष्य को शाश्वत आनन्द की प्राप्ति कराना है। रोटरी इन अर्थों में धर्म है। **Once a Rotarian; always a Rotarian**। जो हृदय से रोटरी को स्वीकार करते हैं वे इसका परित्याग नहीं करते, न कर सकते हैं। उन्हें रोटरी से इश्क हो जाता है। **They fall in love with Rotary**। वे मानने लगते हैं कि—

इश्क कर तो इश्क की तोहीन न कर / या तो बेहोश न हो, गर हो तो होश में न आ।

रोटरी सेवा—संस्था है। जो रोटरी को जानते हैं और रोटरी के माध्यम से सेवा के पथ पर चलना स्वीकार करते हैं, वे शाश्वत आनन्द चाहते हैं। अपने अपने व्यापार — व्यवसाय में सफलता के शीर्ष स्थान पर पहुंच चुके होने के पश्चात् भी उन्हें उस आनन्द की प्राप्ति नहीं हुई है जिसे शाश्वत कहा जा सकता है। वही पाने की चाह उन्हें विवश करती है कि वे रोटरी की सदस्यता के लिए मिला आमंत्रण स्वीकार कर लें और सेवा का आनन्द लें। रोटरी शाश्वत आनन्द का मार्ग है। शाश्वत आनन्द रोटरी की मंजिल है। रोटरी एक जीवन पद्धति है जिसे जिया जाए तो शाश्वत आनन्द की प्राप्ति हो सकती है।

मैं आज आपके बीच पुष्कर तीर्थ धाम से रात्रि यात्रा करके आया हूं और आज वापस वहीं लौट जाऊंगा। वहां मेरे परिवार के सदस्यों और स्नेहीजनों ने श्री राम—कथा का आयोजन किया है। वह एक धर्म सम्मेलन है। कल जब वहां से यहां के लिए प्रस्थान कर रहा था सभी ने पूछा — यह धर्म सम्मेलन छोड़ कर कहाँ जा रहे हो? मैंने कहा कि जहां मैं जा रहा हूं वह भी एक धर्म सम्मेलन है। वहां भी सभी मेरे रोटरी परिवार के सदस्य और स्नेहीजन हैं। रोटरी में भी राम के आदर्शों का ही प्रतिविम्ब है। मुझे जाने दीजिए। और मैं यहां उपस्थित हूं।

एक प्रश्न है जो प्रत्येक मनुष्य के मन को कभी न कभी उद्वेलित करता है। वह है, जीवन का उद्देश्य क्या है? **What is the purpose of life?**

* 'फिएस्टा' — रोटरी कान्फ्रेंस, ग्वालियर में दि. २७-१२-२००६ को न्यायमूर्ति श्री रमेशचन्द्र लाहोटी, पूर्व प्रधान न्यायाधीश, भारत द्वारा दिए गए वक्तव्य का सार।

बहुत कम लोग जानते हैं कि अपनी सदी का महानतम वैज्ञानिक आइंस्टाइन एक धार्मिक व्यक्ति था। वह ऐसा वैज्ञानिक था जो ईश्वर के अस्तित्व और उसकी परम सत्ता में विश्वास करता था। मृत्युशैया पर लेटे हुए जीवन के अन्तिम चरण में उसने कहा कि मैंने अनेक खोजें कीं, विश्व के लिए, मानवता के लिए अनेक आविष्कार किए, पर अपने लिए मैं एक प्रश्न का उत्तर नहीं खोज पाया कि जीवन का सत्य क्या है? मैं यहां क्यों आया था और मैं यहां से क्यों जा रहा हूं? कोजीखोड प्रबन्धन विद्यालय (School of Management) के डायरेक्टर देवाशीष चटर्जी की पुस्तक Break Through के प्रथम अध्याय में वे बहुत रोचक तरीके से प्रश्न उठाते हैं – What is the purpose of Life? और, उत्तर देते हैं– The ‘purpose of life’ is to live a ‘life of purpose’। वही जीवन सार्थक है जिसको जीने का कोई उद्देश्य हो। वही यात्रा सार्थक है जिसकी कोई मंजिल हो। परन्तु संसार में अधिकांश लोग केवल भटकते हैं। परिणाम–

जिन्दगी का अब कोई मकसद नहीं है। इसलिए कोई भी कद आदमकद नहीं है।।

उद्देश्य विहीन जीवन जीने वाला व्यक्ति बौना हो जाता है। उद्देश्य ही वह प्रेरक शक्ति है जो व्यक्ति के व्यक्तित्व को निखारती है, उसे विकसित और व्यापक बनाती है। सोद्देश्य जीवन सेवा और त्याग के प्रति समर्पित जीवन होता है।

एक प्रेरक कहानी है जिसमें सशक्त संदेश है :

गुलाब के पौधे के नीचे एक पत्थर पड़ा था। जब गुलाब पूरा खिल चुका होता था तब उसकी पंखुरियां झरकर उस पत्थर पर गिरती थीं। एक दिन पत्थर बोला–“पंखुरियों, तुम कैसी निष्ठुर हो? प्रतिदिन मुझ पर गिरती हो। यह नहीं सोचतीं कि तुम्हारे कूदने से मुझे कितनी चोट लगती है? मेरा जी चाहता है कि किसी दिन तुम सब को पीस डालूं।” आप समझ गए होंगे कि गुलाब की पंखुरियों से पत्थर को क्या चोट लगेगी; चोट पत्थर को नहीं उस पत्थर के अहंकार और ईर्ष्या के भाव को लगती थी।

रात को पड़ी ओस की बूंदें जो पंखुरियों पर ठहर गई थीं आंसू बनकर पंखुरियों के नेत्रों से बह चलीं। बोलीं – “बंधु, जिस दिन पीस डालोगे उस दिन हम तुम्हारी बहुत आभारी रहेंगीं। अभी तो हमारी गंध केवल उसे मिलती है जो हमें उठाकर अपने ओठों से लगा लेता है। पीस दोगे तो हमारी सुवास यही से दसो दिशाओं में फैल जाएगी। हमारा जीने का उद्देश्य पूरा हो जाएगा। तुम्हारे हाथों पिसकर हुई हमारी मृत्यु एक उत्सव बन जाएगी। हमारी जीवन सार्थक हो जाएगा।”

संसार में जितने महापुरुष हुए हैं जिनके जन्मदिन और निर्वाण दिवस मनाए जाते हैं उन सभी ने अपने जीवन में कोई न कोई ऐसा काम किया है जो यह सन्देश दे गया है कि –

मेरी हयात¹ का मकसद² है इस तरह जीना/कि मौत आए तो उसका भी खैर मकदम³ हो ।

¹ जीवन

² उद्देश्य

³ स्वागत

इसीलिए कहा है कि —

वो काम कर कि जिससे बुलन्द हो मजाकेजीस्त / दिन जिन्दगी के गिनते नहीं हैं माह साल में।

शक्ति और साधन होते हुए भी यदि कोई मानव की सेवा के लिए उनका उपयोग नहीं करता तो (क्षमा कीजिए) वह मनुष्य कहलाने का अधिकारी नहीं है। 'खालिश' का एक शेर कहना चाहता हूं जो ऐसे ही लोगों को लक्ष्य करके लिखा गया है:

अरमां तमाम उम्र के सीने में दफन हैं / हम चलते फिरते लोग मजारों से कम नहीं।

(खालिश बड़ोदवी)

सेवा के भाव हमारे मन में उठते हैं, हम साधन सम्पन्न भी हैं परन्तु संकल्प के अभाव में हम अपने भावों को कार्यरूप में अनूदित नहीं कर पाते हैं।

सेवा के रूप अनेक हैं। सेवा '**मनसा, वाचा, कर्मणा**' — मन से, वाणी से, कर्म से किसी भी प्रकार की जा सकती है। दान भी सेवा है। किसी रुग्ण व्यक्ति से उसकी तबियत के बारे में पूछकर सहानुभूति के दो शब्द कहना, किसी जरूरत मन्द की ओर हाथ बढ़ा समाधान का आश्वासन भर दे देना, नेत्र शिविर लगाना और सुयोग्य विद्यार्थी को उच्चशिक्षा के लिए विदेश भेजकर और भी सक्षम बनाना, ये सभी सेवा के उदाहरण हैं।

हज यात्रा पूरी करके एक दिन अब्दुल्ला बिन मुबारक काबा में सोए हुए थे। सपने में उन्होंने दो फरिश्तों को आपस में बातें करते देखा। एक ने दूसरे से पूछा— 'इस साल हज के लिए कितने आदमी आए और उनमें से कितनों की दुआ कबूल हुई?

जवाब में दूसरे फरिश्ते ने कहा— 'यों हज करने को 40 लाख आए थे, पर इनमें से दुआ किसी की कबूल नहीं हुई है। इस साल दुआ सिर्फ एक ही कबूल हुई है और वह भी ऐसा है, जो यहां नहीं आया।'

पहले फरिश्ते को बहुत अचंभा हुआ। उसने पूछा—'भला वह कौन खुशानसीब है, जो यहां आया भी नहीं और उसकी हज कबूल हो गई?' दूसरे फरिश्ते ने पहले को बताया—' वह है दमिश्क का मोची अली बिन मूफिक।'

उस पाक हस्ती को देखने के लिए अब्दुल्ला बिन मुबारक अगले ही दिन दमिश्क के लिए चल पड़े और वहां उन्होंने मोची मूफिक का घर ढूंढ निकाला। पूछा—' क्या तुम हज को गए थे?'

मूफिक की आंखों में आंसू भर आए। बोला — 'मेरा मुकद्दर ऐसा कहां, जो हज को जा पाता। जिंदगी भर की मेहनत से 700 दिरहम उस यात्रा के लिए जमा किए थे, पर एक दिन मैंने देखा कि पड़ोस के गरीब लोग पेट की ज्वाला बुझाने के लिए उन चीजों को खा रहे थे, जिन्हें खाया नहीं जा सकता। उनकी बेबसी ने मेरा दिल हिला दिया और हज के लिए जो रकम जमा की थी, सो उन मुफलिसों को बांट दी।'

जरूरतमन्दों की मदद करना सच्ची तीर्थयात्रा है।

भारत भूमि पर जितने अवतार हुए हैं, जितने महापुरुष हुए हैं उनमें वे उदाहरण प्रस्तुत किए हैं कि मनुष्य देवत्व की ओर उठे, उसमें प्रभु के गुणों, प्रभुता का, अविर्भाव हो सके। कृष्ण की जीवन-कथा पढ़ें तो जिन कृष्ण ने छोटी उम्र में कंस को पछाड़ दिया था, शिशुपाल को ६६ अपशब्द बोलने तक मुस्कराते हुए सुनते रहे, १०० वां अपशब्द बोलते ही सुदर्शन चक्र से उसका गला काट दिया था। वे कृष्ण क्या दुःशासन, दुर्योधन और शकुनी का संहार नहीं कर सकते थे? पर वे चाहते थे कि अधर्म का नाश कर धर्म की स्थापना का यश मनुष्य को मिले। मनुष्य में यह आत्मविश्वास जागृत हो कि जो काम भगवान् करते हैं या कर सकते हैं, वही मैं भी कर सकता हूँ। इसीलिए विषाद और निराशा में डूबे, शस्त्र फेंक कर भूमि पर बैठ गए अर्जुन को प्रेरित कर उसका आत्मविश्वास जगाया और मनुष्य को अधर्म के नाश के लिए निमित्त बनाया। सेवा का अवसर मनुष्य को देवत्व का भाव जागृत कर प्रभुता की ओर उठने का अवसर है। सेवा संस्कृति है।

सेवा का आदर्श, सेवा का भाव, सेवा की साहसिकता, सेवा के भाव को कार्यरूप में अनूदित करना रोटरी की कार्यशैली है, रोटरी का मर्म है। इस अर्थ में रोटरी एक सांस्कृतिक संस्था है।

टॉल्स्टॉय की एक कहानी है। इस प्रसंग में उसका भी उल्लेख करना चाहूंगा। व्यवसाय से एक चर्मकार किन्तु वृत्ति से ईसा का सच्चा भक्त, ईमानदारी से अपना काम करने वाला, परिश्रमी। एक दिन सपने में ईसा ने उसे दर्शन दिए कि कल रात दस बजे मैं तुम्हारे घर आऊंगा; तुम्हारे साथ खाना खाऊंगा। चर्मकार तो जैसे पागल हो उठा। दूसरे दिन प्रातः काल नहाया-धोया, घर साफ किया और रात की प्रतीक्षा करने लगा। यथाशक्ति जो कुछ बना सकता था, बनाया। दोपहर के करीब, बाहर कुछ शोर-गुल हुआ; खिड़की से झाँककर देखा; एक बूढ़ी स्त्री का थैला छीनकर दो बदमाश भाग रहे थे। उसने दौड़कर बदमाशों को पकड़ा और बूढ़ी स्त्री का थैला वापस किया; फिर उसे अपने घर में लाकर खाना खिलाया, विदा किया। फिर प्रतीक्षा/संध्या को बादल गरजने लगे; तूफान आ गया; पानी बरसने लगा। खिड़कियाँ बंद करने गया, तो देखा कि एक औरत दो बच्चों के साथ पानी में भीग रही थी। उसने बच्चों के साथ उस स्त्री को घर में बुलाया; आग जलाई; उनके कपड़े सुखाए; उन्हें खाना खिलाया; पानी बंद होने पर उन्हें विदा किया। पुनः ईसा की प्रतीक्षा! लगभग आठ बजे दरवाजे पर दस्तक हुई; दौड़कर दरवाजा खोला। शायद प्रभु समय से पहले ही आ गए हों। देखा तो बरसों का बिछड़ा उसका कोई दोस्त; फटेहाल चिथड़ों में दरवाजे पर खड़ा था। उसे भीतर लाया; उसकी रामकहानी सुनी; उसे भी खाना खिलाया; उसे कपड़े दिए और विदा किया।

ईसा के आने का समय हो गया; परंतु दरवाजे पर कोई दस्तक नहीं हुई। वह प्रतीक्षा में भूखे ही सो गया। रात में स्वप्न आया; ईसा उसके सामने थे। हाथ जोड़ कर उसने पूछा – ‘प्रभु! कौन-सा अपराध मुझसे हुआ; आप आए नहीं। मैं भूखा ही सो गया।’ ईसा ने दुलार से उसके गाल थपथपाते हुए कहा – ‘तू बहुत भोला है; कल तो तीन-तीन बार मैं तेरे यहां आया और खाना खाया। पर तू मुझे पहचान नहीं सका। वह बूढ़ी स्त्री; बच्चों के साथ आई औरत; और वह तेरा दोस्त। मैं ही तो था, जो तेरे पास तीन-तीन बार आया और तेरे हाथ से खाना खाया।’

गुणवत्ता की कसौटी पर कसकर वृत्ति और कृति के तीन वर्गभेद किये जा सकते हैं। भूख लगे तो अपने साधनों में जो भी भोजन उपलब्ध है उसका भोग करना – मनुष्य की प्रकृति है। भूख लगी हो, अपने पास भोजन न हो तो दूसरे का भोजन छीन कर खा लेना—यह विकृति है। स्वयं के पास भोजन हो, सामने कोई भूखा आ जाए तो उसके साथ बाँट कर उसे भी भोजन कराना और स्वयं भी पा लेना—यह संस्कृति है। रोटरी सेवा के विविध आयाम मनुष्य की प्रकृति को विकृति से बचाते हैं, संस्कृति की ओर बढ़ाते हैं।

हम और आप सभी एक श्रेष्ठ संसार का सृजन कर सकते हैं। रोटरी की सेवा यह दंभ नहीं करती कि हम आसमान को उतारकर धरती पर ले आएंगे पर यह धरती आसमान की ओर कुछ ऊंची उठ सके, इंसान के रहने के लिए पहिले से बेहतर बन सके, यह विनम्र प्रयास जरूर करती है। इसीलिए, रोटरी और रोटेरियन्स से मुझे प्यार है। सेवा के माध्यम से आनन्द की प्राप्ति होना अवश्यभावी है, असंदिग्ध है। बचपन से सुनता आया हूँ— जो करेगा सेवा, सो पायेगा मेवा। यह दुनिया एक घाटी की तरह है जहां हम जो करते हैं उसी की प्रतिध्वनि हमें प्राप्त होती है। सेवा करने वाले व्यक्ति का व्यक्तित्व, चरित्र और स्वभाव ही ऐसे बन जाते हैं कि वह शाश्वत शान्ति में विचरण करने लगता है। जो हाथ बाग लगाते हैं वे आग नहीं लगाते। और, आग लगाने वाले कभी बाग लगा नहीं सकते। सेवा सृजन है, आनन्द का श्रोत है। **Service is creation. Creation is pleasure.**

Why Rotary leads to peace and pleasure? एक दार्शनिक लिखता है – When we are in an act of service to humanity, we experience the joy of being in communion with the cosmic consciousness, oblivious of our individual and petty concerns. Unconsciously we also experience the joy when we share, give or forgive someone unconditionally, with love bereft of ill will.

जीवन में आनन्द की प्राप्ति त्याग और बलिदान से होती है। हिन्दुओं में यज्ञ की परम्परा है। अग्नि में प्रत्येक आहुति के साथ वे कहते हैं— इदं नममः (*idam namamah*) जिसका अर्थ है – मेरे लिए नहीं, तुम्हारे लिए (*not for me, but for you*). रामचरित मानस में बालक रामचंद्र जी के गुणों के वर्णन करते हुए गोस्वामी तुलसीदासजी भगवान राम के अनेक गुणों में से एक का उल्लेख करते हुए कहते हैं—

जेहि विधि सुखी होहिं पुर लोगा/करहुं कृपा निधि सोइ संजोगा।।

एक संत के बारे में प्रसिद्ध था कि जो भी उनके पास जाता है, आनंदित होकर लौटता है। एक धनिक ने जब यह बात सुनी तो वह उनसे मिलने पहुंच गया। उसने सोचा था कि संत कोई सूत्र या मंत्र बताएंगे जिससे जीवन में शान्ति और आनन्द की प्राप्ति हो सके। इसलिए पहुंचते ही उसने संत से आनंदित रहने की विधि पूछी। संत उसकी बात को अनसुनी कर पक्षियों को दाना खिलाने लगे। सेठ को हैरानी हुई। थोड़ी देर चुप रहने के बाद उसने फिर आनंदित रहने का उपाय पूछा। संत पर कोई असर नहीं पड़ा। वह चिड़ियों में खोये रहे। सेठ का धैर्य जवाब देने लगा। उसने बार-बार आग्रह किया तो संत बोले, 'दुनिया में प्रसन्न रहने का एक ही तरीका है—दूसरे को देना। देने में जो सुख है वह किसी और चीज में नहीं है, पाने में नहीं है। तुम चाहो तो अपनी संपत्ति जरूरतमंदों में लुटाकर आनंदित हो सकते हो।'

How beautifully, Khalil Gibran the great philosopher has said – “ All that we have will some day be given away. Let us open our hearts and give with our hands so that the joy of giving is ours and not of our inheritors.”

सेवा और आनन्द, परमार्थ और परमानन्द का गहरा सम्बंध है। एक कारण है, दूसरा परिणाम। इसमें केवल एक बाधा है— अहंकार, अभिमान, प्रशस्ति की चाह। मैंने अनेक सेवा संस्थायें देखी हैं जो किसी निराश्रित या जरूरतमंद महिला को आत्मनिर्भर बनाने के लिए सिलाई की मशीन भेंट करती हैं। बहुत अच्छी बात है। परन्तु सिलाई मशीन भेंट करने के लिए भव्य समारोह आयोजित होता है। एक मुख्य

अतिथि होते हैं। मशीन 2500 रु. की होती है। फोटो, वीडियो और मुख्य अतिथि के सम्मान में 25000 रु. खर्च किए जाते हैं। प्रचार-प्रसार कुछ सीमा तक ठीक है। उदाहरण देखकर या जानकर लोगों को अनुकरण करने की प्रेरणा मिलती है। पर क्या अधिक अच्छा नहीं होता कि 25000 की 10 सिलाई मशीनें दी जातीं और फोटो पर 2500 खर्च होते? गंभीरतापूर्वक विचार कीजिए, मेरा विनम्र आग्रह है।

एक संत की कठोर साधना से भगवान प्रसन्न हुए। वे प्रकट हुए। साधक संत से कहा, मैं आप पर प्रसन्न हूँ जो वरदान मांगना चाहो मांग सकते हो। इस पर साधक ने विनम्र भाव से कहा— प्रभू, मेरे पास कोई इच्छा बाकी नहीं बची है। साधना के बीच मेरी समस्त इच्छाएं भी समाप्त हो गई हैं। अब कुछ मांगने की इच्छा नहीं रही है। भगवान ने और भी कृपालु होकर कहा — चाह न रखने के कारण ही आप पवित्र और वरदान के योग्य हैं। इच्छा मुक्त होने के कारण भक्त और भगवान के अर्थात् तुम में और मेरे बीच की दीवार गिर गई है, इसलिए अब आप मांग लें।

आखिरकार संत ने उनका अनुरोध स्वीकार कर लिया। वे बोले, ठीक है, आप जो चाहें वरदान दे दें। भगवान ने उन्हें वरदान दिया कि यदि वह किसी भी रोगी को छू देंगे तो वह स्वस्थ हो जाएगा। इसी प्रकार सूखा पेड़ भी उनके छूने से हरा-भरा हो जाएगा। वरदान सुनकर संत फिर सोच में पड़ गए। उन्होंने भगवान से कहा, जब आपने इतनी कृपा की है, तो इतना और कर दीजिए कि यह कार्य मेरे छूने से नहीं मेरी छाया पड़ने से ही हो जाए और मुझे उसका पता भी न चले। किसी चमत्कार का एहसास मेरे अंदर अहंकार उत्पन्न कर सकता है और तब आपका यह वरदान मेरे लिए श्राप बन जाएगा।

भगवान श्रीकृष्ण से एक बार लोगों ने प्रश्न किया कि वह युधिष्ठिर को धर्मराज क्यों कहते हैं? इस पर श्रीकृष्ण ने एक कथा सुनाई। महाभारत का युद्ध चल रहा था। पांडवों ने एक बार महसूस किया कि हर शाम को युधिष्ठिर कहीं गायब हो जाते हैं। कुछ दिनों बाद पता चला कि वह रोज शाम को वेश बदलकर कहीं जाते हैं। एक दिन पांडवों ने इस रहस्य का पता लगाने के लिए उनका पीछा किया तो देखा कि वह युद्ध क्षेत्र में पड़े घायलों की सेवा कर रहे हैं। उनके भाइयों ने पूछा कि वह वेश बदलकर ऐसा क्यों करते हैं? इस पर युधिष्ठिर ने कहा कि इनमें से कई कौरव पक्ष के हैं। यदि मैं प्रकट रूप में होता तो वे मुझे अपना कष्ट नहीं बताते और मुझे सच्ची सेवा के अधिकार से वंचित रहना पड़ता। यह घटना सुनाने के बाद श्रीकृष्ण बोले, 'धर्म और परमार्थ अन्योन्याश्रित हैं। इसी से युधिष्ठिर धर्मराज कहलाते हैं। युधिष्ठिर के भीतर सच्ची करुणा है। युद्ध में रहकर भी वह मानव सेवा के धर्म से विचलित नहीं हुए।'।

धर्म और सेवा एक दूसरे के पर्याय हैं। दोनों का लक्ष्य एक है— आनन्द की प्राप्ति। सेवा के पथ पर चलना आपने स्वीकार किया है तो हृदय से सेवा कीजिए। सेवा कीजिए पर विनम्रता के भाव के साथ। आज के समय में महात्मा गांधी, मदर टेरेसा, नेलसन मंडेला, अन्ना हजारे— मानव सेवा की बेहतरीन मिसालें हैं। हम में से हर एक में गांधी, टेरेसा, मंडेला, हजारे बनने की संभावनाएं छुपी हैं। कमी है तो केवल संकल्प और समर्पण की। महात्मा गांधी फुटपाथ पर लेटे एक कोढ़ी की सेवा कर रहे थे। उसके जख्म अपने हाथों से साफ किए, पट्टी की और भोजन कराया। एक विदेशी बड़े कौतूहल से देख रहा था। गांधी जी के पास आकर बोला, "यदि कोई मुझे हजार रुपये दे तो भी मैं यह काम नहीं करूंगा।" गांधी जी मुस्कराए। बोले— "मेरे मित्र, मैं भी यह काम हजार रुपये के लिए नहीं कर रहा हूँ।" सेवा का भाव ओढ़ा नहीं जाता; वह तो हृदय की गहराई से स्वप्रेरित प्रस्फुरित होता है। तभी सेवा में आनन्द की प्राप्ति होती है।

जो हृदय से सेवा करते हैं उन्हें आदर मिलता है, अमरत्व भी।

शेख सादी से किसी ने पूछा, 'परोपकारी व्यक्ति बड़ा है या ताकतवर आदमी?' शेख सादी ने कहा, 'पहले तुम मेरे प्रश्न का उत्तर दो। यह बताओ कि हातिम⁵ के जमाने में सबसे बड़ा पहलवान कौन था?' उस व्यक्ति ने दिमाग पर जोर डालते हुए कहा, 'हातिम के उपकार के किस्से तो सारा संसार जानता है, लेकिन उस समय सबसे बड़ा पहलवान कौन था, यह तो कोई नहीं जानता।'

'क्यों नहीं जानता?' सादी ने प्रश्न किया। उस व्यक्ति ने कहा, 'क्योंकि उसने ऐसा कोई काम ही नहीं किया कि लोग उसे याद रखें।' सादी ने मुस्करा कहा, 'बस इसी में तुम्हारे सवाल का जवाब है।'

ईश्वर को धन्यवाद दीजिए कि उसने आपको सेवा करने के योग्य बनाया और सेवा करने का अवसर भी दिया है। सेवा करके सेवा का अभिमान मत कीजिए। मेरी हार्दिक कामना है कि प्रत्येक रोटेरियन, आप में से प्रत्येक, सेवा की ऐसी मिसाल पेश करे कि जिसकी सेवा करे उसके मुंह से कुछ ऐसे उद्गार निकल पड़ें कि — लोगों का कहना है कि उन्होंने देवदूत देखे हैं लेकिन मेरे लिए तो तुम्हें ही देखना काफी है।

'फरिश्ते से बेहतर है इंसान बनना/मगर उसमें पड़ती है मिहनत जियादा'

वर्षों पहिले एक मुक्तक पढ़ा था। यह मुक्तक बिना कलम के मेरे जिगर पर लिख गया है। मुझे प्रेरणा देता है उसे प्रस्तुत करते हुए आपकी अनुमति लेता हूँ। सेवा का भाव रखें, निस्वार्थ भाव से सेवा करें, सेवा करें—निंदा और स्तुति के भाव से ऊपर उठकर। आपका यह लोक सुधर जाएगा। परलोक में विश्वास करते हैं तो वह भी सुधर जाएगा। सेवा का भाव, सेवा का सुविचार आप सबके हृदय में जागृत है। सेवा के लिए रोटरी का मार्ग आपने अपनाया है, इसका आनन्द लीजिए। आपको परमानन्द मिलेगा। एक मुक्तक है मेरे अपने लिए। आप सब मेरे हैं, अतः आप सबके लिए भी इस मुक्तक में सेवा और शाश्वत आनन्द का संबंध छुपा है। इसे समझिए और आत्मसात कीजिए —

चल वो चाल कि खुशी से कटे जिन्दगी तेरी
कर वो काम कि लोग तुझे याद किया करें
जहां भी तेरा जिक्र हो, जिक्र खैर⁶ हो
जब भी तेरा नाम लें अदब⁷ से लिया करें।

⁵ हातिमताई — एक ऐतिहासिक व्यक्तित्व जो अपनी दान वीरता और परोपकार की प्रवृत्ति के लिए जाना जाता है।

⁶ शुभकामना या मंगलभाव के साथ उल्लेख।

⁷ आदर, इज्जत।